स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाड़ा विश्व विद्यालय, नांदेड़

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विद्यापीठ, नांदेड.

मानव विद्या कलासंकाय विद्यावाचस्पति(Ph.D)हिंदी उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबंध की रूपरेखा

(Ph.D Synopsis)

शोध का विषय

“मृदुला गर्ग के उपन्यासों में आधुनिक बोध के विशेष संदर्भ में नारी”

शोधकर्ता

वानखेडे गणेश संतोष

(M.A.,M.phil)

शोध निर्देशक

डॉ.सविताकिर्ते

(M.A., Ph.D., SET)

श्रीमती.सुशिलादेवी देशमुख वरिष्ठमहाविद्यालय, लातूर

शोधकेंद्र

हिंदी भाषा साहित्य अनुसंधान केंद्र दयानंद कला महाविद्यालय, लातूर

जुलाई 2021

“मृदुला गर्ग के उपन्यासों में आधुनिक बोध के विशेष संदर्भ में नारी”

1.भूमिका:

उपन्यास एक सर्वाधिक लोक प्रिय साहित्य विधा है। आधुनिक हिंदी साहित्य विकास में उपन्यास विधा का बहुत बड़ा योगदान रहा है। इसका सीधा संबंध मानव समुदायसे होता है। इसका आधार यथार्थ जीवन है, तथा देखने का दृष्टिकोण वस्तुवादी और यथार्थो मुख है। समाज वास्तविक रूप में प्रस्तुत करने का प्रबल माध्यम उपन्यास ही है। उपन्यास में किसी न किसी स्तर पर रोचकता या मनोरंजन के गुण उपस्थित है। जिसके कारण यह पाठकोंके मन को बांधकर रखने की क्षमता रखता है। जब व्यक्ति कुछ विचार-विमर्श करता है, तो उस के मन और मस्तिष्क में बहुत सारे भाव उत्पन्न होने लगते हैं। उन भावों के रूप में देने के लिए वह लेखन का प्रयोग करता है। इस दृष्टिसे भावों और विचारों की अभिव्यक्ति के लिए उपन्यास बेहतर है। आज आधुनिक समय में उपन्यास एक ऐसी विधा है, जिसमें कोई भी लेखक अपने भावों एवं विचारोंको पूरी आत्मीयता एवं स्वतंत्रता कोअभिव्यक्तकर सकता है।इसी कारण हिंदी साहित्य की विधाओं में उपन्यास विधा का अपना विशेष स्थान है। शायद यही वजह रही थी कि, मैंने अपने विचारों को अधिक विस्तार देने के लिए अपना रुख उपन्यास की ओर आकर्षित किया है। इसलिए शोध कार्य करने के लिए “मृदुला गर्ग के उपन्यासों में आधुनिक बोध के विशेष संदर्भ में नारी” इस विषय का चयन किया है।

आठवें दशक में एक सशक्त कथाकारके रूप में अपनी पहचान बनानेवाली मृदुला गर्गजी है। मृदुला गर्ग हिंदी कथा साहित्य के क्षेत्र में प्रवेश़ करनेवाली बहु चर्चित लेखिका है। उन्होंने अपनी रचनाओं में नारी समस्या, नारी संघर्ष आदि. मुद्दोंको उठाया है। स्त्री सशक्ति करण के इस युग में मृदुला गर्गजी जैसी लेखिका ओंका रचनात्मक योगदान स्मरणीय है। इसी

उद्देश्यसे मैंने उनकी रचना ओं पर विशेष अध्ययन करने का निर्णय लिया है। मेरी शोध प्रबंधका विषय “मृदुला गर्ग के उपन्यासों में आधुनिकता बोध के संदर्भ में नारी” है।

2. विषय चयन की प्रेरणा:

मैंने हाल ही में कठगुलाब उपन्यास पर एम.फिलका लघु शोध प्रबंध कार्यपूर्ण किया है,यहउपन्यास में कथावस्तु परक उपन्यास है इसमें स्मिता,मारीयान, नर्मदा,असीमा तथा विपीनयह पात्र है। इन पांच खंडों में कथानक को पीरोते हुए संपूर्ण उपन्यास में नारी का पुरुष द्वारा होने वाले आर्थिक, शारीरिक और मानसिक तथा बौद्धिकशोषण आदि. को दर्शाया है। इसी कारण अन्य उपन्यासों को भी पढ़ने की जिज्ञासा मन में निर्माण हुई। और मैंने सोचा कि क्यों न पीएचडी शोध कार्य के लिए मैं मृदुला गर्ग के समग्र उपन्यासों में आधुनिकबोध के विशेष संदर्भ में नारी का अध्ययन करू।बस यही बात मैंने मेरे मार्गदर्शिका डॉ. सविता किर्तेमैडमसे कहा,तो उन्होंने ही मृदुला गर्ग के उपन्यासों की संक्षिप्त कथावस्तु पढ़ ली और तुरंत मुझसे कहा की ,हां बहुत सही उपन्यास है, आधुनिकता के संदर्भ में नारी उन्होंने अपने ढंग से प्रस्तुत किया है। मेरी तरफ से तो उनके उपन्यासों पर शोध कार्य के लिए अनुमति है। और इसी तरह विषय का चयन हुआ।

3. अनुसंधान का उद्देश्य:

साहित्य समाज का दर्पण है। समाज में जो अच्छा या बुरा होता है,साहित्यकार उसे अपने साहित्य में स्थान देता है।समाज में जिस व्यवस्था कोतत्कालीन समय में आवश्यकता होती है, उस व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए भी साहित्य की रचना की जाती है, अथवा किसी विशेष कार्य के लिए ऐसे विशेष विषय का चयन किया जाता है। “मृदुला गर्ग के उपन्यासों में आधुनिक बोध के विशेष संदर्भ में नारी”इस अनुसंधान कार्य के पीछे मेरेअहमउद्देश्य है, जो इस प्रकार है।

1. आधुनिकता की संदर्भ में नारी को व्यक्तिगत भव भूमि से ऊपर उठाकर सामाजिकता की स्तर पर पहुंचाना।

2. आज भी नारी को जीवन में अध्याय के प्रति संघर्ष का सामना करना पड़ रहा है। इसी पीड़ित प्रवृत्तियों को परखना एवंउनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करना ।

3. मृदुला गर्ग का शिल्प विधान मूलतः स्वानूभूत सत्य है। इस मेंभाषा, शैली, शब्द प्रयोग को परखना मेरे अनुसंधान का उद्देश्य रहाहै।

इस दृष्टि से "मृदुला गर्ग के उपन्यासों में आधुनिकबोध के संदर्भ में नारी" का व्यापक परिचय देना तथा कुछ रहस्य को खोलना ही इस शोध कार्य का मूल लक्ष्य रहा है। इन के उपन्यासों में नारी के संदर्भ में आधुनिकता रूप चित्रित हुआ है। ऐसे में इसका हम पर भी प्रभाव डालता है। जो हमारे ही अनुभव से जुड़ जाता है। मेरा उद्देश्य आधुनिकता के संदर्भ में नारी को अवगत कराना है।इस दृष्टि से मुझे "मृदुला गर्ग के उपन्यासों में आधुनिकबोध के विशेष संदर्भ में नारी" इस विषय पर शोध कार्य करने का निश्चय किया है। मैंने अपने शोध कार्य में मृदुला गर्ग जी के उपन्यासों में आधुनिकबोध के विशेष संदर्भ में नारी का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया है। इस अध्ययन में मैंने उनके उपन्यासों की नारी के संदर्भ में विशेष रुप से ध्यान दिया है।

4.अनुसंधान की पद्धतियां:

ज्ञान का कोशइतना विस्तृत है कि, इसे समग्र रूप से प्राप्त नहीं किया जा सकता।उसे छोटे-छोटे भागों में विभाजित कर ज्ञान ग्रहण करना पड़ता है। इसलिए शोध कार्य की व्यापकता को देखकर मैंने"मृदुलागर्ग के उपन्यासों में आधुनिक बोध के विशेष संदर्भ में नारी"निम्नलिखित अनुसंधान पद्धतियों का सहारा लिया है।जैसे अध्ययन अध्यापन पद्धती, सर्वेक्षणपद्धति ,प्रयोगात्मक पद्धति, पूर्व अनुसंधान व्यक्ति से साक्षात्कार प्रश्नावली तथा निष्कर्षपद्धति आदि.का सहारा लिया है।

5.अनुसंधान का शीर्षक:

अध्ययन की सुविधा के लिए मैंनेइस शोध कार्य“मृदुला गर्ग के उपन्यासों में आधुनिक बोध के विशेष संदर्भ में नारी” को निम्नांकित अध्याय शीर्षक के आधार पर विभाजित किया है। मृदुला गर्ग उपन्यास साहित्य नारी जीवन को केंद्र में रखकर रचा गया है। मृदुला गर्गके उपन्यास साहित्य में आधुनिकता के संदर्भ में नारी का अध्ययन करना इस शोध का उद्देश्यहै। इसमें मैंने मृदुला गर्ग के उपन्यासों का अध्ययन किया है।

पहला अध्याय	:	आधुनिक बोध परिभाषा, स्वरूप एवं लक्षण
दूसरा अध्याय	:	मृदुला गर्ग का व्यक्तित्व एवं कृतित्व
तीसरा अध्याय	:	मृदुला गर्ग के उपन्यासों का तात्विक विवेचन
चौथा अध्याय	:	मृदुला गर्ग का उपन्यास साहित्य आधुनिक बोध के विशेषसंदर्भ में नारी
पांचवा अध्याय	:	मृदुला गर्ग के उपन्यासों में भाषा एवं शिल्प विधान
छठा अध्याय	:	मूल्यांकन एवं निष्कर्ष

6. अनुसंधान कार्य:

हिंदी उपन्यास साहित्य का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है। इसी विस्तार को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत प्रसिद्ध महिला उपन्यासकार “मृदुला गर्ग के उपन्यासों में आधुनिक बोध के विशेष संदर्भ में नारी” को आधार बनाकर विषय के रूप में चयन किया गया है। उपयुक्त सर्वेक्षण से यह स्पष्ट होता है कि, प्रस्तुत अनुसंधान कार्य निम्नलिखित शीर्षक के आधार पर किया गया है। यह अनुसंधान कार्य अध्ययन की दृष्टि से अभी तक पूरी तरह से अछूता है।मृदुलाजी ने अधिकतर उपन्यास नारी को सामने रखकर लिखा है। जिसमें मध्यम वर्गीय समाज जीवन का चित्रण,स्त्री जीवन की समस्याओं का चित्रण, आर्थिक विपन्नता और दहीकशोषण, स्त्रियों पर होने वाले अन्याय-अत्याचार का सामना, आम तथा औसत आदमी , पति-पत्नी संबंधों की

भावहीनता, नारी संघर्ष, नारी चेतना, आधुनिक बोध के संदर्भ में नारी आदि.।उपयुक्त अध्ययन का विवेचन निम्न प्रकार से किया गया है उसमेंयथावश्यक परिवर्तन संभव है।अध्यायो का विभाजन निम्न रूप में किया गया है।

पहला अध्याय: आधुनिक बोध परिभाषा,स्वरूप एवं लक्षण

हिंदी साहित्य में'नारी'अस्मिता का वह आंदोलन है, जो हाशिए पर छोड़ दिए गए नारी अस्तित्व को फिर से केंद्र में लाने और उसकी मानवीय गरिमा को प्रतिष्ठित करने का अभियान है। नारी को सामाजिक संरचना में दूसरे दर्जे पर रखने का मुखर विरोध और नारी को जीवंत मानवीयइकाई के रूप में स्वीकार करने का प्रयास है।आधुनिकता बोध परिभाषा स्वरूपएवं लक्षण इस अध्याय में आधुनिक बोध का अर्थ और परिभाषा एवं आधुनिकता के लक्षण, परंपरा समकालीनता आदि. का अध्ययन किया जाएगा।

दूसरा अध्याय:मृदुला गर्ग का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

मृदुला गर्गहिंदी कथा साहित्य के क्षेत्र में प्रवेश करने वाली आज की बहु चर्चित लेखिका है। मृदुला गर्ग को लेखिका के रूप में स्थापित होने के लिए बहुत संघर्ष करना पड़ा है। मृदुला जी के लेखकियव्यक्तित्व निर्माण में उनके परिवार की प्रेरणा तथा परिवेशगत संस्कार प्रमुख रहे हैं। मृदुलाजीने अनेक रचनाओं का निर्माण किया है।आठवें दशक में सशक्त कथाकार के रूप में अपनी पहचान बनाने वाली मृदुला जी न केवल कथाकार है बल्कि एक समर्थ उपन्यासकार, नाटककार, निबंधकार भी है।मृदुलाजी ने कहानी उपन्यास के अलावा तिननाटक भी लिखकर अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय उन्होंने अपने रचना और साहित्य केमाध्यम से दिया है। इस अध्याय में मृदुला गर्गका व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन किया जाएगा।

तीसरा अध्याय: मृदुला गर्ग के उपन्यासों का तात्विक विवेचन

उपन्यास'उप'और'न्यास' से मिलकर बना है।'उप'का अर्थ 'समीप'और'न्यास' का अर्थ'रचना'अर्थात उपन्यास है। जिसमें मानव जीवन के किसी तत्व को मुक्ति के रूप में

समन्वित कर समीप रखा जाएगा।इस अध्याय में मृदुला गर्ग जी के उपन्यासों का तात्विक विवेचन किया गया है। मृदुला गर्ग के उपन्यासों की कथावस्तु, पात्रों का चरित्र चित्रण, संवाद योजना, देश काल तथा वातावरण स्थिति, भाषा शैली और उद्देश्य को रेखांकित किया है। इस अध्याय में हिंदी मृदुलागर्ग के उपन्यासों का तात्विक विवेचन किया जाएगा।

चौथा अध्याय: मृदुला गर्ग का उपन्यास साहित्य आधुनिक बोध के विशेष संदर्भ में नारी

मृदुला गर्ग जी ने छह उपन्यासों का निर्माण किया है। मृदुला जी के उपन्यासों में 'नारी' इसको आगे कर-कर लिखे है। चौथा अध्याय में मृदुला गर्ग की समग्र उपन्यास साहित्य का आधुनिक बोध विशेष के संदर्भ में नारी इसका अध्ययन किया जाएगा।आधुनिकता बोधकोअज्ञेयने आज के बदलते हुएसंवेदनाबोधको आधुनिकता कहां है।उनके मतानुसार केवल वर्तमान ही आधुनिकता नहीं है। आज का ईश्वर,धर्म, मानवता आदि के संदर्भ में अलग दृष्टि से विचार करता है।वहरूढिगत मान्यताओं को अलग नजरिए से देखता है।इस तरह आगे के अनुसार आधुनिक वही है, जिसकी संवेदना बदली हुई है। यांत्रिक और वैज्ञानिक युग के भाव-बोधमें परिवर्तन का दूसरा नाम आधुनिकता है तथा इससे उत्पन्न बोध 'आधुनिक बोध' है।

पांचवा अध्याय: मृदुला गर्ग के उपन्यासों में भाषा एवं शिल्प विधान

इस अध्याय में मैंने जो मृदुला गर्गजी के उपन्यासों का शिल्प विधान का अध्ययन किया है। प्रत्येक साहित्यकार की अपनी शैली होती है। साहित्यकार की अपनी भावानुभूति, आधुनिकता बोध, विचार, संवेदना का संयोजन कर कल्पना शक्तिद्वारा साहित्य की सृष्टि करता है। उसी प्रकार मदुलाजी की भाषा शैली अनूठी है। वे अपने उपन्यासों में अनेक भाषा शैली का बखूबी से प्रयोग करती हैं। मृदुलाजी के भाषा शैली पर अध्ययन करने के बाद उपन्यासों के विभिन्न रूप सामने दृष्टवहो जाते हैं जैसे भावा नुकूलता, यथार्थवादी भाषा,

आधुनिकता, संगितात्मक भाषा, सांकेतिक भाषा, काव्यात्मक भाषा, अलंकृत भाषा, बिंबात्मक भाषा आदि. का प्रयोग हुआ है। इस अध्याय में मृदुला गर्ग जी की भाषा एवं शिल्प विधान का अध्ययन किया जाएगा।

छठा अध्याय: मूल्यांकन एवं निष्कर्ष

मूल्यांकन एवं निष्कर्ष की शोध कार्य का अंतिम अध्यायहै। इस अध्याय में संपूर्ण शोध प्रबंध का सार रूप में वर्णन है, तथा अन्य अध्यायोंमें वर्णित संपूर्ण सामग्री का निचोड़ रखा गया है।अंतइस अध्याय में सभी अध्ययन के निष्कर्ष निकालकर विश्लेषण और अवलोकन किया गया है। इसअध्याय का महत्व क्यों है कि, इसके अध्ययन से संपूर्ण शोध प्रबंध समझ में आता है। मूल्यांकन एवं निष्कर्ष के बाद परिशिष्ट में आधार ग्रंथ,संदर्भ ग्रंथ, शब्दकोश और पत्र-पत्रिकाओं की सूची दी गई है।

7. अनुसंधान का महत्व:

“मृदुला गर्ग के उपन्यासों में आधुनिक बोध के विशेष संदर्भ में नारी” यह अनुसंधान कार्य के उपरांत यह ज्ञात हुआ कि, नारी यह समाज का चित्र है, जिसमें नारी की सही अथवा गलत छवि का अंकन होता है। उपन्यासकार का उद्देश्य है नारी की समस्या, आधुनिकता के संदर्भ में नारी आदि. कोसुलझानाहै।इसलिए मृदुला गर्ग जी का योगदान हिंदी साहित्य के क्षेत्र में अधिक महत्वपूर्ण दिखाई देता है। शोध की दृष्टि से“मृदुला गर्ग के उपन्यासों में आधुनिकबोध विशेष के संदर्भ में नारी” अध्ययन होना समय की मांग है क्योंकि उनके उपन्यासों में आधुनिकता बोधके संदर्भ में नारी इस विषय संदर्भ अनुसंधान कार्य नहीं हुआ है।“मृदुला गर्ग के उपन्यासों में आधुनिक बोध के विशेष संदर्भ में नारी” उसका अध्ययन अपना महत्व रखता है। उपन्यासों में आधुनिक बोध विशेष के संदर्भ में नारी प्रयोग किया है उसका अध्ययन होना समय की जरूरत है इसी कारण अनुसंधान कार्य महत्व है।

8.अनुसंधान की उपयोगिता:

मेरी शोध की उपयोगिता यह है कि, हिंदी साहित्य में मृदुला जीने उपन्यासों में व्यक्त नारी या आधुनिकता बोध के संदर्भ में नारी के नए प्रयोगों और साहित्य को मानव यथार्थ के नए सिद्धांतों से जोड़कर नए आयाम स्थापित किए हैं, इस शोध विषय के माध्यम से आधुनिक बोध के विशेष संदर्भ में नारी, नारी की पीड़ा और घुटन समस्याओं से परिचित करा कर साहित्य को एक नई दृष्टि देने का मेरा नगण्य प्रयास होगा। मृदुला गर्ग जी का उपन्यास साहित्य नारी समस्या, नारी संघर्ष, आधुनिक नारी, आधुनिकता के संदर्भ में नारी आदि.मृदुला गर्ग जी ने अधिकतर उपन्यासों में नारी को सामने रखकर उपन्यास लिखा है। उपन्यासों में स्त्री जीवन की समस्याओं का चित्रण, आर्थिक विपन्नता और दैहिक शोषण, स्त्रियों पर होने वाले अत्याचार का सामना, आम तथा औसत आदमी,पति पत्नी संबंधों की भावहिनता, स्त्री-पुरुष संबंध, नारी चेतना, नारी संघर्ष आदि. समस्याओं को उजागर करने का साहसिक कार्य मृदुला गर्ग जी ने किया है इसी कारण मृदुला गर्गजी के उपन्यासों का महत्व है।

9.अनुसंधान की उपलब्धियां:

मृदुला गर्गजी के उपन्यासों की विशेषता यह है कि उनमें विभिन्न विचारों द्वारा हमारे समाज में घटित घटनाओं के अलग-अलग पहलू को सामने लाने का प्रयास किया है। भाषा शैली की दृष्टि से भी मृदुला गर्ग के उपन्यास साहित्य अपनी अलग पहचान बनाता है। इसी कारण मृदुला गर्ग हिंदी उपन्यास साहित्य में लोकप्रिय बनी है। “मृदुला गर्ग के उपन्यासों में आधुनिकबोधकेविशेष संदर्भ में नारी” के विविध आयाम शोध विषय के अध्ययन के उपरांत निष्कर्ष रूप में जो तथ्य प्राप्त हुए हैं, वह निम्नलिखित रुप से उपलब्धियां प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

1. हिंदी साहित्य क्षितिज पर नारी के बाद के युग में एक सुप्रतिष्ठित गणमान्य नाम है, मृदुला गर्ग जी का लिया जाता है।

2. मृदुलागर्गबहुमुखी प्रतिभा केधनीएवं बहुआयामी साहित्यकार है। कहानी, उपन्यास ,निबंध ,नाटककार, संस्मरण आदि. विभिन्न विधाओं का साहित्य लिखा है।

3. मृदुला गर्ग हिंदी कथा साहित्य के क्षेत्र में प्रवेश करने वाली बहुचर्चित लेखिका हैं।

4. गुणवत्ता एवंविविधता की दृष्टि से हिंदी उपन्यास साहित्य में मृदुला गर्ग जी का योगदान 'नारी' के संदर्भ में और अद्वितीय है।

5. मृदुला गर्ग के उपन्यासों में 'नारी'में आधुनिकता बोध में नारी, नारी विमर्श, नारी चेतना, नारी संघर्ष, पारिवारिक ,सामाजिक ,राजकीय ,आर्थिक सांस्कृतिक नारी जीवन की विवेचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

10.अनुसंधान कार्य की मौलिकता:

अध्ययन को सरल व सुगठित बनाने के लिए विषय को निश्चित रेखाओं व सीमाओं में बांध लेना श्रेयस्कर होता है, क्योंकि विषय को परी सीमित कर लेने से दृष्टि में भटकाव नहीं आता है और लक्ष्य की और उनमुक्ता बनी रहती है। प्रस्तुत शोध प्रबंध अर्थात "मृदुला गर्ग के उपन्यासों में आधुनिक बोध के विशेषसंदर्भ में नारी" से संबंधित अनेक पहलुओं पर विचार किया गया है। यह विषय व्यापक गंभीरता लिए हुए हैं। और तो इस पर केंद्रित होकर कार्य करना अपेक्षित है ताकि "मृदुला गर्ग जी की उपन्यासों में आधुनिक बोधके विशेष संदर्भ में नारी" को स्पष्ट रूप से समझा जा सके। यह विषय शोध कार्य की दृष्टि से नवीन एवंमौलिक है।

11. अनुसंधान कार्य की व्याप्ति और सीमाएं:

"मृदुला गर्ग के उपन्यासों में आधुनिकबोध के विशेष संदर्भ में नारी" यह शोध प्रबंध हिंदी साहित्य की व्यापक आयाम की अभिव्यक्ति करती है। प्रस्तुत विषय पर अनुसंधान की

रूपरेखा लिखते समय इस विषय के विविध आयाम मेरे सामने आए हैं। प्रस्तुत शोध की अपनी सीमा के कारण विविध आयामों का विस्तृत विवेचन करना संभव नहीं होगा। अतः भविष्य में निम्न विषय पर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान कार्य कर सकता है।

1. मृदुलागर्गकेउपन्यासोंकामनोवैज्ञानिकअध्ययन।
2. मृदुला गर्ग के कथा साहित्य में कामकाजी नारी।
3. मृदुला गर्ग के उपन्यासों में व्यक्त कार्य क्षेत्रीयजीवन की उपज।
4. मृदुला गर्ग के उपन्यासों में व्यक्त सांस्कृतिक अध्ययन।
5. मृदुला गर्गके उपन्यासों में व्यक्त नारी संघर्ष।
6. मृदुला गर्ग के उपन्यासों में नारी चेतना।

यह मेरी विषय गत मर्यादा, तथा विषय की अति व्यापकता के कारण मैं इन विषयों के प्रति ध्यान नहीं दे सका इसलिए भविष्य में शोधार्थी इन विषयों को चयन कर संशोधन कार्य कर सकता है। तथा इन कमियों को पूरा कर सकते हैं।

12. मूल्यांकन एवंनिष्कर्ष:

1. मृदुला गर्ग जी के उपन्यासमें 'नारी' के रूप को बहुमुखी प्रतिभा को निभाया है, जिसमे आधुनिक नारी, कामकाजी नारी, नारी चेतना ,अनपढ नारी, आधुनिकता बोध के संदर्भ में नारीआदी. को अभिव्यक्त किया है।
2. मृदुला गर्ग जी ने अपने उपन्यासों में अहकिसंतुष्टि पानेवाली एक लेखिका को किस तरह आर्थिक और नैतिक शोषण की शिकार होती है।
3. मृदुला गर्ग जी प्रगतिशील विचारों की नारी है। इन्होंने समाज में प्रचलित नारी की मान्यताओं और परंपराओं को बड़े नजदीक से देखा। जहां एक और उन्होंने समाज को प्रगति के मार्ग पर अग्रसर करने वाली नारी मान्यताओं को महत्व दिया, वही समाज में विकार उत्पन्न करने वाली सामाजिक रूढ़ियों तथा परंपराओं का विरोध किया है।

4. मृदुला गर्गने उपन्यास में नारी के दमन और शोषण को स्पष्ट करते हुए नारी के संघर्ष और नारी चेतना को भी दर्शाया है।

5. मृदुलागर्गजी ने उपन्यास में दोपीढ़ियों के वैचारिक संघर्ष को चित्रित किया है। दो पीढ़ियोंकीटकराहट और दंद्व को उपन्यासों में अभिव्यक्त किया है।

6. मृदुला गर्ग जी ने अपने उपन्यासों मैं यहां बताया है की पति की व्यस्तता से पति-पत्नी के दांपत्य संबंधों में उदासीनता निर्माण होती है इसको अभिव्यक्त किया है।

7. मृदुला गर्ग जी के उपन्यास साहित्य में अभिव्यक्तनारी जीवन के सूत्र प्रेरणादाई एवंशाश्वत है। उनके उपन्यास न केवल हिंदी परंपरा की उपलब्धियांहै।

परिशिष्ट:

अनुसंधान कार्य में परिशिष्ट का उपयोग अनुसंधान कार्य के अंत में किया जाता है। परिशिष्ट में अध्ययन सहित शोध पत्र के प्रारूप के लिए एक शैली दिशा निर्देशों का पालन करती है। परिशिष्ट में सामान्य तौर से आपके पास स्त्रोत्र , तालिका विवरण,आंकड़ा संसाधन, संदर्भ ग्रंथ, आधार ग्रंथ, को मामूली ग्रंथ या अन्य ग्रंथों को परिशिष्ट में जोड़ा जाता है, पुस्तक के बारे में, प्रकाशन के बारे में, प्रकाशन वर्ष के बारे में आगे की व्याख्या हो सकती है । या अन्य जानकारी मेंनिर्दिष्ट किया जाता है।इस तरह से परिशिष्ट अनुसंधान कार्यों की सामग्री है जिसे अनुसंधान कार्य में अध्ययन किया जाता है।

पहला अध्याय

आधुनिक बोध परिभाषा, स्वरूप एवं लक्षण

1.1 आधुनिकबोध:अर्थएवंपरिभाषा

1.2 आधुनिक बोध:अर्थ एवं लक्षण

1.3 आधुनिकता परंपरा एवं समकालीनता

दूसराअध्याय

मृदुला गर्ग का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

2.1 मृदुला गर्ग का जीवन परिचय

- 2.1.1 मृदुला गर्ग की बाल्यावस्था
- 2.1.2 कन्या के रूप में मृदुला जी
- 2.1.3 अच्छी पत्नी के रूप में मृदुला जी
- 2.1.4 मृदुला जी के स्वभाव का अंतरंग
- 2.1.5 मृदुला जी के स्वभाव का बहिरंग
- 2.1.6 संवेदनशील लेखिका के रूप में मृदुलाजी

2.2. मृदुला गर्ग कृतित्व

- 2.2.1 कहानीकार के रूप में मृदुला जी
- 2.2.2 उपन्यासकार के रूप में मृदुलाजी
- 2.2.3 नाटककार के रूप में मृदुला जी
- 2.2.4 अनुवादक के रूप में मृदुला जी
- 2.2.5 संस्मरणकारके रूप में मृदुला जी
- 2.2.6 स्तंभलेखकके रूप में मृदुला जी
- 2.2.7 मृदुला जीकीपुरस्कृत रचनाए

तीसरा अध्याय

मृदुला गर्गके उपन्यासों का तात्विक विवेचन

3.1 उपन्यास शब्द की उत्पत्ति

3.2 उपन्यास अर्थ

3.3 उपन्यास का स्वरूप

3.4 उपन्यास की परिभाषा

3.5 उपन्यास का तात्विक विवेचन

- 3.5.1 कथावस्तु
- 3.5.2 पात्रों का चरित्र-चित्रण
- 3.5.3 संवाद योजना
- 3.5.4 देश काल तथा वातावरण स्थिति
- 3.5.5 भाषा शैली
- 3.5.6उद्देश्य

3.6 मृदुला गर्ग के उपन्यासों का तात्विक विवेचन

- 3.6.1 उसके हिस्से की धूप (1975)
- 3.6.2 वंशज (1976)
- 3.6.3 चित्तकोबरा(1979)
- 3.6.4 अनित्य (1980)

3.6.5 मैं औरमै (1984)

3.6.6 कठगुलाब (1996)

चौथा अध्याय

मृदुला गर्ग का उपन्यास साहित्य आधुनिक बोध के विशेष संदर्भ में नारी

4.1 उपन्यासों मेंचित्रित नारी पात्र और आधुनिकता बोध

4.1.1 शिक्षितनारीपात्र और आधुनिकता बोध

4.1.2 महानगरीयजीवनजीनेवालीनारीऔरआधुनिकता बोध

4.1.3 नगरीयजीवनजीनेवालीनारीऔरआधुनिकताबोध

4.1.4 अशिक्षितनारीपात्रऔर आधुनिकता बोध

4.1.5 ग्रामीणजीवनसेसंबंधितनारीपात्र और आधुनिकता बोध

4.1.6 दापत्यजीवनसे संबंधित नारी पात्र और आधुनिकता बोध

4.1.6 घुटनशिलनारीपात्र और आधुनिकता बोध

4.1.7 अहमग्रस्तनारीपात्र और आधुनिकता बोध

4.1.8 तनावग्रस्तनारीपात्र और आधुनिकता बोध

4.1.9 स्वच्छंदजीवनजीनेवाली नारी और आधुनिकता बोध

4.1.10 लेखकीयसंघर्षसे जूझनेवाली नारीऔर आधुनिकता बोध

पांचवा अध्याय

मृदुला गर्ग के उपन्यासों में भाषा एवं शिल्प विधान

5.1 शिल्पशब्द की उत्पत्ति

5.2 शिल्पशब्द का अर्थ

5.3 शिल्प का स्वरूप

5.4 शिल्प की परिभाषा

5.5 शिल्प के तत्व

5.6 मृदुला गर्ग के उपन्यासों में शिल्प विधान

5.6.1 मृदुला गर्ग के उपन्यासों की भाषा

5.6.1.1 सरलएवंसुबोध

5.6.1.2 भावानुकूल

5.6.1.3 पात्रानुकुल

5.6.1.4 विश्लेषणात्मक

5.6.1.5 व्यंगात्मक

5.6.1.6 बिंबात्मक

5.6.1.7 चित्रात्मक

5.6.1.8 प्रतीकात्मक

5.6.1.9 अलंकारिक

5.6.1.10 लोकगीत

5.6.2 मृदुला गर्ग के उपन्यासों कीशैली

5.6.2.1 वर्णनात्मक शैली

5.6.2.2 आत्मकथात्मक शैली

5.6.2.3 संवादात्मकशैली

5.6.2.4 पत्र शैली

5.6.2.5 काव्यात्मक शैली

5.6.2.6 गीतात्मकशैली

5.6.3 मृदुला गर्ग के उपन्यासों में शब्द प्रयोग

5.6.3.1 तत्सम शब्द

5.6.3.2 तद्भव शब्द

5.6.3.3 अरबी शब्द

5.6.3.4 उर्दू शब्द

5.6.3.5 अंग्रेजी शब्द

5.6.3.6 आंचलिक शब्द

5.6.3.7 युग्म शब्द

5.6.3.8 पुनरव्रतात्मकशब्द

5.6.3.9 मुहावरे

5.6.3.10 गालियां

निष्कर्ष

संदर्भ

संदर्भ ग्रंथ सूची

अ) मुलग्रंथ

उपन्यास

1. मृदुलागर्ग, उसकेहिस्सेकीधूप, राजकमलप्रकाशननईदिल्ली-1976

2. मृदुलागर्ग,वंशज, नेशनलपब्लिशिंगहाउसनई दिल्ली-1976

3. मृदुला गर्ग, चितकोबरा, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली-1979

4. मृदुला गर्ग, अनित्य, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली-1980

5. मृदुलागर्ग, कठगुलाब, भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली-1996

6. मृदुला गर्ग, मैं और मै,नेशनल पब्लिकेशन हाउस नई दिल्ली-2001

कहानी संग्रह

1. मृदुलागर्ग,कितनीकैदे,नेशनलपब्लिकेशनहाउसदरियागंज,नईदिल्ली-1975

2. मृदुलागर्ग, दुनिया का कायदा , इंद्रप्रस्थ प्रकाशन दिल्ली-1975

3. मृदुला गर्ग, टुकड़ा-टुकड़ा आदमी, नेशनल पब्लिकेशन हाउस दरियागंज, नई दिल्ली-1976

4. मृदुलागर्ग , ग्लेशियर से, प्रभात प्रकाशन ,नई दिल्ली-1980

5. मृदुला गर्ग, उर्फ सैम, राजकमल प्रकाशन,दिल्ली-1986

6. मृदुला गर्ग ,शहर के नाम ,भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली -1990

7. मृदुला गर्ग,समागम, भारतीय ज्ञानपीठ ,नई दिल्ली- 1996

8. मृदुला गर्ग,डेफोडिल जल रहे हैं, राजकमल प्रकाशन ,दिल्ली- 1978

9. मृदुला गर्ग, चर्चित कहानियां, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली- 1997

10. मृदुलागर्गजूतेकाजोड़गोभी कातोड, पेंगुइन बुक्स द्वारा प्रकाशित, 2006

11. मृदुला गर्ग,दसप्रतिनिधि कहानियां, किताबघर प्रकाशन ,नई दिल्ली 2007

12. मृदुला गर्ग,संगती-विसंगति, नेशनल पब्लिशिंग हाउस ,नई दिल्ली- 2004

आ)आधार ग्रंथ

1. डॉ. तारा अग्रवाल ,मृदुला गर्ग का कथा साहित्य, विद्या प्रकाशन ,कानपुर-2004

2. डॉ. कीर्ति मिश्रा, महिला उपन्यास लेखन एवं स्त्री विमर्श, समीक्षा प्रकाशन, इलाहाबाद -2010

3. डॉ. जयश्री शिंदे, हिंदी उपन्यास और अद्यतन दृष्टि, एसबी पब्लिकेशन -2012

4. अनामिका ,स्त्री विमर्श का लोक पक्ष, वाणी प्रकाशन, दिल्ली- 2009

5. अतुल देवा अरोड़ा, आधुनिकता के संदर्भ मैं हिंदी उपन्यास,पब्लिकेशन चंडीगढ़-1974

6. डॉ अमर ज्योति ,महिला उपन्यास कारों के उपन्यासों में नारीवादी दृष्टि, अन्नपूर्णा प्रकाशन कानपुर-1999

7. अनामिका, स्त्री का मानचित्र, सारांशप्रकाशन प्रा.ली.दिल्ली-1999

8. डॉ. इंद्रनाथ मदान ,आधुनिकता और हिंदी साहित्य, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 1973

9. डॉ. उर्मिला मिश्र, आधुनिकता और मोहन राकेश, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी-1997

10. उषा सक्सेना, हिंदी उपन्यासों का शिल्पगत विकास,शोध साहित्य प्रकाशन, इलाहाबाद 1972

11. डॉ. किरण बाला अरोड़ा, साठोत्तरी हिंदी उपन्यासों में नारी, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर -1990

12. डॉ. कैलाश वाजपेयी,आधुनिकता:साहित्य के संदर्भ में, संचयन प्रकाशन कानपुर 1988

13. दुर्गा प्रसाद गुप्त ,हिंदी में आधुनिकतावाद, आकाशदीप पब्लिकेशन, नई दिल्ली- 1994

आ) हिंदीकोशग्रंथ:

1. नालंदाविशालशब्दसागर,श्रीनवलजी,आदिशबुकडिपो,नईदिल्ली- 2010

2. डॉ.हरदेव बाहरी,अंग्रेजी- हिंदी शब्दकोश, राजपाल एंड दिल्ली सन -2000

3. रामचंद्र वर्मा ,मानक हिंदी कोश,ज्ञानमंडलली. वाराणसी- संवत 2009

4. धीरेंद्र वर्मा हिंदी साहित्य कोश, ज्ञान मंडल ली. वाराणसी -1985

5. धर्मेंद्र कुमार गुप्ता,संस्कृत हिंदी शब्दकोश 1992

6. संक्षिप्त हिंदी शब्द सागर ,नागरी प्रचारिणी -सभा काशी, रामचंद्र वर्मा सं.2014

7. डॉ. हरदेव बाहरी, हिंदी- अंग्रेजी शब्दकोश, राजपाल एंड सन्स नई दिल्ली 2002

8. आचार्य रामचंद्र वर्मा,डॉ. बद्रीनाथ कपूर, उर्दू-हिंदीकोशशब्दलोक प्रकाशन, वाराणसी- 2008

इ) पत्र-पत्रिकाएं:

1. आजकल,नईदिल्ली

2. आलोचना ,नई दिल्ली

3. इंद्रप्रस्थ भारती, नई दिल्ली

4. एक और अंतरिश,जयपुर

5. समालोचक,जयपुर

6. साहित्य अमृत,नई दिल्ली

7. साहित्य कुंज, कनाडा

8. सूजन कुंज, श्रीगंगानगर

9. नयज्ञानोदय ,भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली

ई) अंग्रेजीग्रंथ:

1. स्टडी ऑफ ओरिस्सनफोकलोर, कुंजबिहारी दास,विश्व भारत शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगाल 1953

2. हिस्ट्री ऑफ इंडियन लिटरेचर, विंटर नितन्न,वॉल्यूम

उ) वेबसाइट

1. www.books.google.com
2. www.hindilitererature.com
3. www.wikipedia.org

शोधकर्ता
वानखेड़ेगणेशसंतोष

शोध निर्देशक
डॉ.सविता किर्ते
हिंदी विभाग,
श्रीमती. सुशीलादेवी देशमुख
वरिष्ठ महाविद्यालय,लातूर